

७. मौर्यकालीन भारत

७.१ यूनानी (ग्रीक) सम्राट सिकंदर का आक्रमण ।

७.२ मौर्य साम्राज्य



क्या तुम जानते हो ?

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में ईरान में साइरस नामक राजा ने विशाल साम्राज्य स्थापित किया था । यह साम्राज्य पश्चिमोत्तर भारत से लेकर रोम तथा अफ्रीका के इजिप्त तक फैला हुआ था । ईसा पूर्व ५१८ के लगभग ईरान के दारयूश नामक सम्राट ने भारत के पश्चिमोत्तर का प्रदेश और पंजाब तक का कुछ क्षेत्र जीत लिया था । दारयूश ने इस प्रदेश के कुछ सैनिकों को अपनी सेना में भरती करवाया था । इन सैनिकों की जानकारी ग्रीक इतिहासकारों के साहित्य द्वारा प्राप्त होती है । सम्राट दारयूश के कार्यकाल में भारत और ईरान के बीच राजनीतिक संबंध प्रस्थापित हुए । इससे व्यापार और कला के क्षेत्रों में आदान-प्रदान बढ़ा । सम्राट दारयूश ने अपने साम्राज्य में सर्वत्र 'दारिक' नामक मुद्रा को प्रचलित किया । इससे व्यापार करना सुलभ हुआ । सम्राट दारयूश के कार्यकाल में राजधानी नगरी-पर्सिपोलिस का निर्माण किया गया । पर्सिपोलिस ईरान में है ।



दारिक

७.१ यूनानी सम्राट सिकंदर का आक्रमण

यूनानी सम्राट अलेक्जेंडर अर्थात् सिकंदर ने ईसा पूर्व ३२६ में भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश पर आक्रमण किया । वह सिंधु नदी लाँघकर तक्षशिला पहुँचा । इस मार्ग पर स्थानीय भारतीय राजाओं ने



सम्राट सिकंदर

उसके साथ घमासान युद्ध किए । फिर भी सिकंदर पंजाब तक पहुँचने में सफल रहा । परंतु इस अभियान में उसके सैनिकों को अपार कष्ट सहने पड़े । उन्हें मातृभूमि को लौटने की तीव्र इच्छा हो रही थी । सैनिकों ने सिकंदर के विरुद्ध विद्रोह किया । सिकंदर के लिए पीछे हटना आवश्यक हो गया था । भारत के जीते हुए प्रदेशों के प्रबंधन हेतु उसने यूनानी अधिकारियों को नियुक्त किया और उन्हें 'सत्रप' कहा गया । इसके बाद वह लौट गया परंतु बीच रास्ते में बैबीलोन नामक स्थान पर ईसा पूर्व ३२३ में उसकी मृत्यु हुई । यह स्थान वर्तमान इराक में है ।

सिकंदर के आगमन से भारत और पश्चिमी विश्व के बीच व्यापार बढ़ा । सिकंदर के साथ जो इतिहासकार थे; उन्होंने अपने साहित्य द्वारा पश्चिमी विश्व को भारत से परिचित कराया । यूनानी मूर्तिकला का भारतीय कला शैली पर प्रभाव पड़ा । इससे जिस शैली का निर्माण हुआ; उसे गांधार शैली कहते हैं । यूनानी राजाओं के सिक्के वैशिष्ट्यपूर्ण होते थे । सिक्के पर एक ओर सिक्के ढालने वाले राजा का चित्र तथा दूसरी ओर किसी यूनानी देवता का चित्र अंकित रहता था । सिक्के पर उस राजा का नाम भी अंकित रहता था । सिकंदर के सिक्के भी ऐसे



सिकंदर का चांदी का सिक्का – दोनों पहलू

ही थे। कालांतर में भारत के राजाओं ने भी ऐसे ही सिक्के ढालना प्रारंभ किया।

७.२ मौर्य साम्राज्य

चंद्रगुप्त मौर्य : चंद्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। मगध के नंद राजा धनानंद की अत्याचारी, अन्यायी शासन व्यवस्था से लोग त्रस्त हो गए थे। उसको पराजित कर चंद्रगुप्त मौर्य ने ईसा पूर्व लगभग ३२५ में मगध पर अपनी सत्ता प्रस्थापित की। उसने अवंती और सौराष्ट्र को जीतकर अपने साम्राज्य को विस्तारित करना प्रारंभ किया। सिकंदर द्वारा नियुक्त सत्रपों के बीच सिकंदर की मृत्यु के बाद सत्ता के लिए परस्पर युद्ध प्रारंभ हुए। सेल्यूकस निकेटर सिकंदर का सेनापति था। सिकंदर की मृत्यु के बाद वह बैबीलोन का राजा बन बैठा था। उसने पश्चिमोत्तर भारत और पंजाब पर आक्रमण किया। चंद्रगुप्त मौर्य ने उसके आक्रमण का सफलतापूर्वक सामना किया। सेल्यूकस निकेटर को पराजित करने से अफगानिस्तान के काबुल, कंधार, हेरात प्रदेश उसके साम्राज्य में समाविष्ट हुए।



क्या तुम जानते हो?

संस्कृत नाटककार विशाखदत्त ने 'मुद्राराक्षस' नाटक लिखा है। इस नाटक में धनानंद का संहार कर चंद्रगुप्त मौर्य ने अपनी सत्ता किस प्रकार स्थापित की; इस कथानक को व्यक्त किया है। इस कथानक में आर्य चाणक्य अर्थात् कौटिल्य के योगदान को विशेष महत्त्व दिया गया है।

मेगस्थनीज सेल्यूकस निकेटर का राजदूत था और चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में रह चुका था। उसके 'इंडिका' ग्रंथ में लिखित यह तत्कालीन लेखन मौर्यकालीन भारत का अध्ययन करने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण साधन है।

गुजरात में जूनागढ़ के समीप सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने 'सुदर्शन' नामक बाँध का निर्माण करवाया था और इस उल्लेख का शिलालेख पाया जाता है।



क्या तुम जानते हो?

जैन परंपरा के अनुसार माना जाता है कि चंद्रगुप्त मौर्य ने जैन धर्म का स्वीकार किया था। जीवन के अंतिम समय में उसने राज्यपद का त्याग किया था। अपना शेष जीवन उसने कर्नाटक के श्रवणबेलगोल में व्यतीत किया। वहीं पर उसकी मृत्यु हुई।

सम्राट अशोक : चंद्रगुप्त द्वारा राज्यपद का त्याग किए जाने के बाद उसका बेटा बिंदुसार मगध का राजा बना। बिंदुसार की मृत्यु के पश्चात उसका बेटा अशोक ईसा पूर्व २७३ में सत्तासीन हुआ। राजा बनने से पूर्व उसकी नियुक्ति तक्षशिला और उज्जयिनी के राज्यपाल के रूप में की गई थी। राज्यपाल के रूप में कार्य करते समय तक्षशिला में विद्रोह हुआ था और अशोक ने इस विद्रोह को सफलतापूर्वक दबाया था। मगध का सम्राट पद प्राप्त करने के पश्चात उसने कलिंग पर आक्रमण किया। कलिंग राज्य का प्रदेश वर्तमान ओडिशा राज्य में था। सम्राट अशोक ने कलिंग पर विजय प्राप्त की।

सम्राट अशोक के राज्य का विस्तार पश्चिमोत्तर अफगानिस्तान तथा उत्तर दिशा में नेपाल से दक्षिण दिशा में कर्नाटक तथा आंध्र प्रदेश तक, पूर्व दिशा में बंगाल से पश्चिम में सौराष्ट्र तक था।

कलिंग युद्ध : कलिंग युद्ध में हुए रक्तपात को देखकर अशोक ने पुनः कभी भी युद्ध न करने का निश्चय किया। उसकी दृष्टि से सत्य, अहिंसा, दूसरों के



यह सदैव ध्यान में रखो ।

सम्राट अशोक का संदेश :

- माता-पिता की सेवा करना उत्तम होता है ।
- जिस विजय के कारण प्रेम की भावना बढ़ती है; वही सच्ची विजय है ।



करके देखो ।

भारत के मानचित्र प्रारूप में सम्राट अशोक के शिलालेख और स्तंभलेख दर्शानेवाले स्थानों को दर्शाओ ।

प्रति दया और क्षमावृत्ति जैसे गुण महत्त्वपूर्ण थे । अशोक ने अपना संदेश लोगों तक पहुँचाने के लिए विभिन्न स्थानों पर शिलालेख और स्तंभ उकेरवाए । ये लेख ब्राह्मी लिपि में हैं । इन लेखों में उसने स्वयं का उल्लेख 'देवानं पियो पियदसी' (ईश्वर का प्रिय प्रियदर्शी) इस रूप में किया है । राज्याभिषेक होने के आठ वर्षों के पश्चात उसने कलिंग पर विजय प्राप्त की और वहाँ हुए संहार को देखकर उसका हृदय परिवर्तन हुआ ; यह उल्लेख उसके एक लेखन में मिलता है ।

सम्राट अशोक के दिल्ली-टोपड़ा के एक लेख में चमगादड़, बंदर, गैंडा आदि का शिकार न करें, जंगल में आग न लगाएँ जैसे कठोर प्रतिबंध लिखकर रखे हुए थे ।



सम्राट अशोक

अशोक का धर्म प्रसार कार्य : अशोक ने स्वयं बौद्ध धर्म स्वीकार किया था । उसने पाटलिपुत्र में बौद्ध धर्म की तीसरी परिषद का आयोजन किया था । बौद्ध धर्म के प्रसार हेतु अशोक ने अपने बेटे महेन्द्र और बेटी संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था । दक्षिण-पूर्व एशिया और मध्य एशिया के देशों में भी धर्मप्रसार हेतु बौद्ध भिक्षुओं को भेजा था । उसने अनेक स्तूपों और विहारों का निर्माण करवाया ।

अशोक के लोककल्याणकारी कार्य : अशोक ने प्रजा को सुख-सुविधा उपलब्ध कराने पर बल दिया । जैसे- लोगों को तथा पशुओं को निःशुल्क औषधि मिले, ऐसी सुविधा उपलब्ध करवाई । अनेक सड़कों का निर्माण करवाया । छाँव के लिए सड़कों के दोनों ओर पेड़ लगवाए । धर्मशालाओं का निर्माण करवाया । कुएँ खुदवाएँ ।



करके देखो ।

अपने परिसर में कौन-कौन-सी संस्थाएँ कौन-कौन-से लोककल्याणकारी कार्य करती हैं; इसका प्रतिवेदन तैयार करो । .

मौर्यकालीन राज्य प्रशासन : मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र थी । राज्य प्रशासन की सुविधा की दृष्टि से साम्राज्य के चार विभाग बनाए गए थे । प्रत्येक विभाग की स्वतंत्र राजधानी थी ।

१. पूर्व विभाग - तोशाली (ओडिशा),
२. पश्चिम विभाग - उज्जयिनी (मध्य प्रदेश),
३. दक्षिण विभाग - सुवर्णगिरि (कर्नाटक में कनकगिरि),
४. उत्तर विभाग - तक्षशिला (पाकिस्तान)

राज्य प्रशासन को लेकर राजा को सलाह देने के लिए मंत्रिपरिषद हुआ करती थी । विभिन्न स्तरों पर कार्य करने वाले अनेक अधिकारी थे । इन सभी का पर्यवेक्षण करने और शत्रु की गतिविधियों पर नजर रखने हेतु बहुत सक्षम गुप्तचर विभाग था ।

मौर्यकालीन जनजीवन : मौर्य कालखंड में कृषि उत्पादन को बहुत महत्त्व था । कृषि के साथ-साथ व्यापार तथा अन्य उद्योग भी बहुत समृद्ध हुए थे । हस्तिदंत पर उकेरने का कार्य, कपड़ा बुनना और रँगना, धातुकार्य जैसे कई व्यवसाय चलते थे । चमकवाले काले रंग के मिट्टी के बरतन बनाए जाते थे । जलपोतों का निर्माण भी बड़ी मात्रा में चलने वाला उद्योग था ।

धातुकार्य में अनेक धातुओं के साथ लोहे की वस्तुएँ बनाने की तकनीक विकसित हुई थी ।

नगरों और गाँवों में तीज-त्योहार, उत्सव संपन्न होते थे । उनमें लोगों के मनोरंजन के लिए नृत्य-गायन के कार्यक्रम होते थे । दंगल, रथों की दौड़ लोकप्रिय खेल थे । पाँसों के खेल और शतरंज जैसे खेल बड़ी रुचि से खेले जाते थे । शतरंज को 'अष्टपद' के नाम से जाना जाता था ।



स्तंभशीर्ष

मौर्यकालीन कला और साहित्य : सम्राट अशोक के कार्यकाल में शिल्पकला को प्रोत्साहन मिला ।



क्या तुम जानते हो ?

भारत की राजमुद्रा सारनाथ में निर्मित अशोक स्तंभ के आधार पर बनाई गई है । सारनाथ में निर्मित इस मूल स्तंभ पर चार सिंह हैं । प्रत्येक सिंह की प्रतिमा के नीचे आड़ी पट्टी पर चक्र है । उनमें से हमें एक ही चक्र पूरी तरह से दिखाई देता है । चक्र के एक ओर अश्व(घोड़ा) तथा दूसरी ओर वृषभ(बैल) अंकित हैं । राजमुद्रा की जो दिशा दिखाई नहीं देता; उस दिशा पर इसी भाँति हाथी और सिंह अंकित हैं ।

अशोक द्वारा स्थापित स्तंभ भारतीय शिल्पकला के उत्तम नमूने हैं । उसके द्वारा निर्मित स्तंभों पर सिंह, हाथी और बैल जैसे पशुओं के अत्यंत उत्तम शिल्प हैं । सारनाथ में निर्मित अशोक स्तंभ पर अंकित चक्र भारत के राष्ट्रध्वज पर दिखाई देता है । इस स्तंभ पर चारों ओर सिंह अंकित हैं । परंतु सामने से देखते समय उनमें से तीन सिंह ही दिखाई देते हैं । यह भारत की राजमुद्रा है । अशोक के कालखंड में उकेरी गई बराबर टीलों की गुफाएँ प्रसिद्ध हैं । ये गुफाएँ बिहार में हैं । भारत की गुफाओं में यह गुफा सबसे प्राचीन गुफा है ।

सम्राट अशोक की मृत्यु के पश्चात मौर्य साम्राज्य का हास प्रारंभ हुआ । मौर्य कालखंड के बाद भारत में

बराबर की गुफाएँ



अनेक राज्य उदित हुए। कुछ साम्राज्यों का भी उदय हुआ। मौर्य साम्राज्य प्राचीन भारत का सब से विशाल

साम्राज्य था। मौर्य कालखंड के बाद घटित राजनीतिक एवं सामाजिक घटनाओं को हम अगले पाठ में समझेंगे।



स्वाध्याय

१. निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो।

- (१) सत्रपों में परस्पर युद्ध क्यों प्रारंभ हुए?
- (२) अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रसार हेतु किसे श्रीलंका भेजा?
- (३) मौर्य कालखंड में कौन-से व्यवसाय चलते थे?
- (४) सम्राट अशोक द्वारा स्थापित स्तंभों पर किन पशुओं के शिल्प हैं?

२. बताओ तो:

- (१) सत्रप
- (२) सुदर्शन
- (३) 'देवानं पियो पियदसी'
- (४) अष्टपद

३. याद करो और लिखो :

- (१) चंद्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य की व्याप्ति।
- (२) सम्राट अशोक के साम्राज्य की व्याप्ति।

४. जोड़ियाँ मिलाओ :

- | | |
|--|--|
| <p>‘अ’ समूह</p> <p>(१) सम्राट अलेक्जंडर</p> <p>(२) मेगस्थनीज</p> <p>(३) सम्राट अशोक</p> | <p>‘ब’ समूह</p> <p>(अ) सेक्यूलस निकेटर का राजदूत</p> <p>(ब) यूनानी सम्राट</p> <p>(क) रोम का सम्राट</p> <p>(ड) मगध का सम्राट</p> |
|--|--|

५. तुम्हें क्या लगता है?

- (१) अंततः सिकंदर को पीछे हटना पड़ा।
- (२) यूनानी राजाओं के सिक्के वैशिष्ट्यपूर्ण होते थे?
- (३) सम्राट अशोक ने कभी भी युद्ध न करने का निश्चय किया।

६. अपने शब्दों में वर्णन करो :

- (१) सम्राट अशोक के लोककल्याणकारी कार्य।
- (२) मौर्यकालीन मनोरंजन और खेल के साधन।

७. आज युआन श्वांग जैसे विदेशी यात्री यदि तुमसे मिलेंगे तो तुम क्या करोगे ?

उपक्रम :

- (१) तुम्हारे परिसर में जनप्रतिनिधियों द्वारा किए गए लोककल्याणकारी कार्यों की जानकारी प्राप्त करो और उनको विस्तार में लिखो।
- (२) सम्राट अशोक के जीवन की अधिक जानकारी प्राप्त करो और नाट्यीकरण द्वारा उस जानकारी को कक्षा में प्रस्तुत करो।

